

शिव और विष्णु स्तोत्र ।

असको

24848

C

मियानी नगर निवासी
स्वामी बोधानंद गिरिजी
ने बनाया ।

और

लाला तुलसीदास बिरमाणी

के दान में

राय साहिब मुंशी गुलाबसिंह

ऐण्डसनंज के

मुफोद-ग्राम प्रेस लाहौर

में छपवाया ॥

संवत् १९५८

ॐ पूर्णं मदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णं मद्बुध्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ १ ॥

—

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥ १ ॥

ब्रह्माणमथविष्णुं च शिवं गणपतिं तथा ।
अम्बिकां शारदां चापि वन्दे विघ्नोपशान्तये २
॥ ॐ ॥

अथ शिवस्तोत्र प्रारंभः ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ सदाशिव सदाशिव सकलदुख हरो ॥
मेरोवेरक्यो देर एती करो ॥ श्री गणपति
गंजानन गणेश है तूही । जीभर्तारिद्धीका
सिद्धेश है तूही ॥ तूही कण्ठ संकट हरण-
हार हो । मैं आजिज खड़ा तेर दरबार हो ॥

सदाशिव सदाशिव सकल दुखहरो । मेरी
 बेरक्यों देर एतीकरो ॥ १ ॥ तुम अच्युत
 पुरुष आदि अवनाशिहो । स्वयंजोत घटघट
 मैं प्रकाशहो । त्रैगुण्य शक्तिते ब्रह्मा विष्णु
 हरो । त्रैगुण्य मायाते सकल सृष्टिकरो ।
 सदाशिव सदाशिव सकलदुख हरो । मेरी
 बेरक्यों देर एती करो ॥ २ ॥ तूही चंद्र सूर्य
 तूही मू अकाश । तूही तारामंडल तूही
 ध्रुवप्रकाश । तूही वायु अग्निते पानीकरो
 तेरीमहिमा बानी न जानीवरो । सदाशिव
 सदाशिव ० ॥ ३ ॥ तेरानाम संकटहरण वि
 श्वनाथ । पैदा पाल संहार समतेरेहाथ ।
 भक्तिमुक्तिदायिन कृपासागरो । भक्तकाज
 करनेको उनियागरो । सदाशिव सदाशिव

॥ ४ ॥ येह संसार सागर दुखोंका समाज ।
 तेरानाम सागर मै भारी जहाज । तेराना-
 म लै कोट पापीतरो । मै आज्ञकी बेरी
 क्यों देरीकरो । सदाशिव सदाशिव सकल
 दुखहरो । मेरी बेरक्यों देर एती करो ॥ ५ ॥
 तूही मत्स्य कूर्म वराहाकास्वरूप । नरसिंह
 वामनहोपरशुराम रूप । तूही राम कृष्ण
 बोधाकलिकहो । भगतहेत अवतार लीला
 करो । सदाशिव सदाशिव० ॥ ६ ॥ जोवाम
 न की भक्ति बलिकोछला । श्रीरामकर भक्त
 रावनको दला । कृष्ण भक्तकर अमित बल
 धरो । मारयो कंस शिशुपाल कंसीवरो । सदा
 शिव सदाशिव० ॥ ७ ॥ तूशंकर विश्वंभर
 महादेवजी । सभी देव दानव

तेरीमायाते चार खानीवरो। करे लख चौ-
 रासी जीआजूनहरो। सदाशिव सदाशिव०
 ८॥ सतीकाजोथा दक्षप्रजापतपिता। उसी
 यज्ञ निरादर शिवोका किता। कट्रोसोस
 धड उसपै बकरा धरयो। जो उस्ततकरी
 उसने तुमहस पड्यो। सदाशिव सदाशिव
 ९॥ हिमालेने जार्द्धथी पुत्री अनूप। महां
 माया प्रगटी सतीका सरूप। उसी ने
 कीया ध्यान तुमरा हरो। तबी लै वराती
 जा गिरजा वरो। सदाशिव सदाशिव० ॥
 १०॥ मलेउ बटना गिरिजाने बालककीया
 खडा द्वारे शिवको न आने दीआ। कटयो
 सीस जब सुनकचे गिरिजा रोइ। तबीतुम
 जवाइछो गजाननवरो। सदाशिव सदा-

शिव० ॥ ११ ॥ हरीजो लिआए कमलफुल
 हजार । जो नाम नौ सौ नडिंनवे
 हजार । घटो एक जवनेच पंकज धरयो ।
 सुदर्शनदीउो हरि प्रजापति करयो । सदा-
 शिव सदाशिव० ॥ १२ ॥ त्रिपुरदैत्योने
 जव दुखाएथे देव । दुखी हो शरण आकरे
 तेरी सेव । त्रिपुरमार बाणन से लीएपरो ।
 तेरानां त्रिपुरारि तबतें पखो । सदाशिव
 सदाशिव० ॥ १३ ॥ जो मनमथनेकीआथा
 तुमसो विरोध । कीआ भस्म उसको तुमारे
 क्रोध । रतीहो दुखी आपुकारावरो ॥ तबी
 तुमकह्यो जा प्रदुग्धनवरो । सदाशिव स-
 दाशिव० ॥ १४ ॥ जोभक्ती तुमारो करोथी
 कुवेर । उसीको खजाना दिआ गिरसुमेर ।

मंडारी कुठारी कीआ बहुहरो । महाराज
 छव उस पर धरो । सदाशिव सदाशिव० ॥

१५ ॥ जो रावण असुर तेरी पूजा करे । द-
 शो सीसकाटो तेरे आगे धरे । प्रसन्नहोदी-
 आ तुमने उसको वरो । असुरराज लंकामे
 जाकर करो । सदाशिव सदाशिव० ॥ १६ ॥

जो रावण रघूतमकी सीताहरी । तबी हो
 दुखी राम पूजा करी । हनूमनरूप उसकी
 रक्षा कखो । तेरा नाम तवते रामेश्वरपखो ।
 सदाशिव सदाशिव० ॥ १७ ॥ जो गोकर्ण
 को एक चंडाली गद्ग । उसी को किसीने
 बिल्लपत्नी दद्व । वैहभूषीथोखाथूका लिंगपर
 परयो । तबीतुम मुक्तदीनी उसको वरयो
 सदाशिव सदाशिव० ॥ १८ ॥ जो कंधिक

गयोवन में मृगमारने । जगोधारपैहिर
 रात निजकारने । मारेउवाँउसनबिलपत्री
 मूडेयो । गिडीलिंगपै तुमप्रसन्नहोपडेयो ।
 सदाशिव सदाशिव सकलदुखे हरो ॥
 जोसीमंतनी कां डुवाथाभतार । उसीने
 तेराव्रत रखासोमवार । डुवातुमलिआइछो
 चंद्रांगदवरो । सदातुम भगतपाल रक्षा-
 करो । सदाशिवसदाशिव० ॥ १६ ॥ समुद्र
 मंथन लागे दानवतेदेव । निकाले चौदां
 रत्न करतेरी सेव । जोनिकलीगरल देख
 मांगेसुरो । तबीतुमने खालोआ उसको
 बरो । सदाशिव सदाशिव० ॥ २० ॥ खाइ-
 आ जैहरकों तबभ्योनीलकंठ । मगतहेत
 सीताकरी कंठमंठ । सदातुम दयालो कृपा

लोहरो । मेरीवेरक्यों देर एती करो । सदा
 शिव सदाशिव सकल दुख हरो । मेरीवेरक्यों
 देर एती करो । जो पुष्पदंतथा एकगंधर्व
 राज । हुआ आप उसको खोइआ सभममा-
 न । होइआ दीनतब महिमां तेरी कखो ।
 दीआ सकल समाज उसको वरो । सदाशि-
 व सदाशिव० ॥ २२ ॥ जो सोरठ सोमनाथ
 महादेव हो । जो श्रीशैलवासी मलकारजन
 वरो । महांकाल उजैनमै तुमहरो । जो
 छांकारमै लिंग ममलेश्वरो । सदाशिव स-
 दाशिव ॥ २३ ॥ जो केदार स्वामी हिमाले-
 श्वरो । जो डाकनदेश भीमाशंकर वरो ।
 जो काशीपुरीलिंग विश्वेश्वरो । नदीगौतमी
 लिंग त्रिंबकेश्वरो । सदाशिव सदाशिव० ॥

२४ ॥ बांधीपुलजो सागरपै रामेश्वरो । जो
 दारक बनेबैठे नागेश्वरो । चितामूभीतारी
 वैजनाथहो । शिवालेमुलक लिंगदुशमेश्व
 रो । सदाशिवसदाशिव० ॥ २५ ॥ गिनेकौन
 सारे भगत वेशुमार । मेरीअकलथोड़ी तं
 अपरंअपार । ब्रह्मादिक सकल देव थक थ-
 कपडो । मैं अदनासा इनसाफ कैसेकरो॥
 सदाशिवसदाशिव सकलदुखहरो ॥ २६ ॥
 कल्पवृक्षकानी समुद्रदवात । सकलगिरी
 सिआही जिमीकागजात । दिनेरातसारद
 जो लिखनाकरो । तमीसिफतसारीनथारी
 वरो । सदाशिवसदाशिव० ॥ २७ ॥ चारो
 युग ऋषीश्वर तपीश्वरमुनी । सिफततेरी
 करकरथके नावनी । मैंकलियुगका आजि

जं गुनिहगोरहौ । नकातिबकोई सिफत
 कैसेकरो । सदाशिवसदाशिव० ॥ २८ ॥
 तूकलासगांमी म'आजिज जमीन । करो
 ध्यान हरदम घिसावो जबोन । मेरे
 औगणं पर नहो चित धरो । पकड-
 वाहो जगदीश अपना करो । सदाशिव
 सदाशिव ॥ २९ ॥ मेरी अरज सुनीए महा-
 देवजी । बिना तेरे किसकी करो सेवजी ।
 शिवोशिव करो हे भवमय हरो । दीना-
 नाथ अनाथपै करुणाकरो । सदाशिव सदा
 शिव ॥ ३० ॥ तूहीं मक्तवत्सल सुनों दीन
 दयाल । म' आजिज खडा तेरेद्वारे निहाल ।
 महादेव शंकर विश्वंमर हरो । मेरे हाल
 पर रहम क्योंनकरो । सदाशिव सदाशिव

सकल दुख हरो । मेरीवेर क्यों देर
 एतों करो ॥ ३१ ॥ इतिश्री लूणमिश्राणी
 नगर निवासी श्रीमत पंडित निहालचंद
 विरचितं शिवस्तोत्र समाप्तम् ॥ शुभं
 भवतु ॥ ओं नमो भगवते वासुदेवाय । ओं
 नमो नारायणाय । ओं रामाय नमः । ओं कृ-
 ण्णाय नमः । ओं नमः शिवाय ॥ इन मंत्रों
 विष जिस मंत्र में अधिक श्रद्धा हो तिसका
 जप करणा । ये शिव विष्णु राम कृष्ण
 के नाम हैं । अब चार देवोंके सारभूत गा-
 यत्री मंत्रको लिखते हैं ओं भूर्भुवः स्वः त-
 त्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो
 योनः प्रचोदयात् ॥ इति गायत्री मंत्रः यह
 गायत्री मंत्र जप मदमांस मद्यण से तथा

तिमंद कोकृपालु शंकरसरस ॥१॥ ओं शि-
 वायनमः । ओं महेश्वरायनमः । ओं शंभुवे
 नमः । ओं स्वयंभुवे नमः । ओं शशि-
 शिखराय नमः । ओं वामदेवाय नमः ॥
 ओं विरूपाक्ष्याय नमः । ओं कपर्दिने
 नमः । ओं नीललोहिताय नमः । ओं
 शंकरायनमः । ओं शूलपाणये नमः । ओं
 विष्णुबल्लभायनमः । ओं शिपि विष्णाय
 नमः । ओं अंबिकानाथायनमः । ओं श्री कं-
 ठायनमः । ओं मत्त वत्सलायनमः । ओं म-
 वायनमः । ओं शर्वायनमः । ओं रुद्रायनमः
 ओं पशुपतयेनमः । ओं योगेश्वरायनमः ।
 ओं परमहंस गतयेनमः । ओं मुक्ति नाथा-
 यनमः । ओं काशीनाथायनमः । ओं त्रिपु-

रातकायनमः । ओं कौलाश वासिननमः ।
 ओं गंगाधरायनमः । ओं धूर्जटायनमः ।
 ओं सोम सूर्याग्निलोचनायनमः । ओं ह-
 रायनमः । ओं मरुमधूलितविग्रहायनमः ।
 ओं सांबसदाशिवायनमः । ओं नागमूष-
 णायनमः । ओं सोमनाथेश्वरायनमः । ओं
 मलकार जनेश्वरायनमः । ओं काशीविश्व
 नाथायनमः । ओं केदारेश्वराय नमः ।
 ओं रामेश्वराय नमः । ओं वेदेश्वराय नमः
 ओं कारेश्वरायनमः । ओं ममलेश्वराय
 नमः । ओं महो कालेश्वरायनमः । ओं व्र
 ङ्गिेश्वरायनमः । ओं नागेश्वरायनमः ।
 ओं वेदेश्वरायनमः । ओं शामेश्वरायनमः ।
 ओं भीमेश्वरायनमः । ओं विश्वकर्त्रे नमः ॥

ओं विश्वमन्त्रे नमः । ओं विश्वसंहत्रे
 नमः । ओं विश्वनाथाय नमः । ओं आदि
 देवाय नमः । ओं श्रीमहादेवाय नमः ।
 ओं सदाशिवाय नमः । ओं पार्वती प-
 तये नमः । ओं मृत्युञ्जयाय नमः । ओं मृडा-
 य नमः । ओं ललाटाक्षियानमः । ओं सोम
 मूर्तये नमः । ओं दक्षाध्वरविध्वंसिने नमः ।
 ओं विव्यासेश्वराय नमः । ओं व्योम केश-
 य नमः । ओं दिगम्बराय नमः । ओं पतित पा-
 वनाय नमः । ओं शरणागतिपावनाय नमः ।
 ओं भर्गाय नमः । ओं भक्तानां भुक्तिमुक्तिफल
 दात्रे नमः । ओं ओं काररूपाय नमः ।
 ओं सर्वज्ञाय नमः । ओं कालचक्रप्रवर्तिने
 नमः । ओं सच्चिदानन्दाय नमः । ओं शां-

तिस्वरूपाय नमः । ओं तेजोरूपाय नमः ।
 ओं आत्मारामाय नमः । ओं सदो जाताय
 नमः । ओं तत्पुरुषाय नमः । ओं ईशाय
 नमः । ओं अघोराय नमः । ओं वामदे-
 वाय नमः । ओं प्रमथाधिपतये नमः । ओं
 गणनाथाय नमः । ओं वीरभद्राय नमः ।
 ओं सहस्राक्षाय नमः । ओं सहस्रपदये
 नमः । ओं जान्हवीजनकाय नमः । ओं वे-
 दांतसाराय नमः । ओं नित्याय नमः । ओं
 सुधाय नमः । ओं ईश्वराय नमः । ओं मा-
 र्कण्डेश्वराय नमः । ओं वशिष्ठेश्वराय नमः
 ओं ब्रह्मेश्वराय नमः । ओं अगस्त्येश्वराय-
 नमः । ओं ज्ञानस्वरूपाय नमः । ओं उग्रा-
 य नमः । ओं करवीरप्रियाय नमः । ओं विश्व

रूपायनमः । ओं ब्रह्माविष्णु रुद्रावतारेभ्यो
 नमः । ओं पंचवक्त्रे नमः । ओं महामुनी
 मुकटधारिणे नमः । ओं सृष्टि स्थिति लय
 कारिणे नमः । ओं श्रुति गम्यायनमः । ओं
 व्यासेश्वरायनमः । ओं वेदांतसारायनमः ।
 ओं परमदयालवे नमः । ओं अनेककाटि
 ब्रह्मांडजनकायनमः । ओं अनंतायनमः ।
 ओं तारकायनमः । ओं परमेश्वरायनमः ।
 ओं परिपूर्णायनमः । ओं परमब्रह्मणेनमः
 ॥११०॥ इति वेदसार शिव नामावली स-
 माप्ता ॥ ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ओं
 रामायनमः । ओं रामभद्रायनमः । ओं राम
 चंद्रायनमः । ओं कृष्णायनमः । ओं कृष्ण
 भद्रायनमः । ओं कृष्ण चंद्रायनमः । ओं

नारायणायनमः । ओं वासुदेवायनमः । ओं
 सर्वात्मनेनमः । ओं पुण्डरीकाक्षाय नमः ।
 ओं गोविन्दायनमः । ओं माधवायनमः । ओं
 मधु सूदनायनमः । ओं विविक्रमायनमः ।
 ओं अच्युतायनमः । ओं जनार्दनाय नमः ।
 ओं कृष्णकेशायनमः । ओं केशवायनमः ।
 ओं विष्णवेनमः । ओं बनिमालिने नमः ।
 ओं पद्म नाभायनमः । ओं जलशायिनेनमः ।
 ओं परमात्मनेनमः । ओं नारसिंहाय
 नमः । ओं पुरुषायनमः । ओं गरुडध्वजाय
 नमः । ओं हिरण्यगर्भायनमः । ओं त-
 त्सतव्रह्मणेनमः । ॥२८॥ इति वेदसार शि-
 वविष्णु नामावलि समाप्ता ॥ शुभं भ-
 वतु ॥ ये वेदसागर-ईश्वर, के नामों का

पुरुष पवित्र होकर प्रातः मध्याह्न तथा सा-
यंकाल नित्यप्रति ऐकाकर पाठ करे है
वह पुरुष इस लोक में स्त्री पुत्र धन आ-
दिक मनवांछित सुखां को प्राप्त होकर
देह त्यागसे पीछे स्वर्ग वैकुण्ठ कैलाश
ब्रह्मलोक आदिक उत्तम गती को प्राप्ति
होवे है इस वास्ते अपने कल्याण की इ-
च्छावान पुरुषो इन शिव विष्णु के नामों
को तथा स्तोत्र को नित्यप्रति पठन करने
योग्य है ॥ अब शिव ब्रह्मा विष्णु इन तीन
देवत्यों की आरती को लिखते हैं । जै शिव
ओंकारा हरशिव ओंकारा ॥ ब्रह्मा विष्णु स-
दाशिव अर्धंगी गौरां ॥ ओं हर हर हर म-
हादेव । एकानन चतुरानन पंचानन

राजे । शिव पंचाननराजे हंसासन गरुडा-
 सन वृषवाहन साजे । ओं हर हर हर महा-
 देव । दोभुज चारु चतुर्भुज दशभुज तुम
 सोहै शिव दशभुज तुम सोहै तीनो एक
 स्वरूपा त्रिभुवन मनमोहै । ओं हर हर हर
 महादेव । श्वेतांबर पीतांबर वागंबर अंगे
 शिव वागंबर अंगे । इंद्रादिक सनकादिक
 भूतादिक संगे । ओं हर हर हर महादेव ।
 अक्षमाला वनमाला रुंडमालाधारी शिव
 रुंडमाला धारो । चंदन मृगमद लेपन भा-
 लेशशिधारी । ओं हर हर हर महादेव ।
 भस्मत्रलितविग्रह वामांगा गौरी शिव वा
 मांगा गौरी । मुनिगण सुरनर सेवत ब्रह्मा
 दिक शौरी । ओं हर हर हर महादेव

करमध्ये करमंडलचक्र विशूलधरता शिव -
 चक्र विशूल धरता । जग कर्ता जगभर्ता
 जगनिश्चे हर्ता । ओं हर हर हर महा-
 देव । कानन कुंडल शोभित गलमोतिन
 माला शिव गल मोतिअनमाला । जटा मै
 गंग विराजे ओढे मृगछाला । ओं हर हर
 हर महादेव । सच्चिदानंद स्वरूपा त्रिभु-
 वन के राजे शिव त्रिभुवन के राजे । चारी
 वेद उचारत अनहदके बाजे । ओं हर हर
 हर महादेव । सारस्वती वर ब्रह्मा लक्ष्मी
 वर विष्णु शिव लक्ष्मी वर विष्णु । अर-
 धंगी पीआ रंगी गौरां शिवसंगी । ओं हर
 हर हर महादेव । चौसठ योगिनी मंगल
 गावत निरत करत भैरो शिवनिरत क-

रत भैरो। बाजे ताल मृदंगा और वाजत डौ
 रो। ओं हर हर हर महादेव। काशी में वि-
 श्वनाथ विराजे नंदा ब्रह्मचारी। शिव नंदा
 ब्रह्मचारी। निसदिन भोग लगावत महिमा
 अधिकारी। ओं हर हर हर महादेव। शि-
 वजी की आरती मंगल निशिदिन जो गावे
 शिव निसदिन जो गावे। कहत शिवानंद
 स्वामी वांछित फलपावे। ओं हर हर हर
 महादेव। जैशिव ओंकारा हर शिव ओं
 कारा। ब्रह्मा विष्णु सदाशिव ब्रह्मा विष्णु
 महादेव अर्द्धांगी गौरां। ओं हर हर हर
 महादेव ॥ इति शिवविष्णु आरती समाप्त
 ओं हरे राम हरे राम। रामराम हरे हरे।
 हरे कृष्ण हरे कृष्ण। कृष्ण कृष्ण हरेहरो

ॐ नमः अब शिवजी के अवतार हनुमानजी
 का श्लोक लिखते हैं ॥ मनोजवं मासुत तु-
 ल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् । वा-
 तात्मजं वानर यूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं
 प्रपद्ये ॥ अथ गुसांई तुलसीदास तथा श्री
 हरि योगीश्वर भरथरी जी आदिक महा-
 त्मां कोआं वानीआंको लिखते हैं ॥ दोहरा
 गिरजा संतसमागमसम न लाभ ककुआन ।
 विन हरि कृपा होइना गावे वेद पुरान ॥
 ॥ १ ॥ चौरासी के खेतमें बीते जन्म अनेका
 राजव गुरुगोविंदकी जन्मन दीनो एक ॥ २
 तुलसी वोह दिन यादकर ऊपर पांउ तले
 सीस । भूमंडमै आइकर विसर गिछो ज-
 गदीस ॥ ३ ॥ स्वास स्वास हरिनाम जप

बृथा स्वास मतीखोए। अन्तकाल के स्वास
 कां येही स्वास मतीहोए ॥४॥ रे मन तज
 निज विहरगत अंतरबर सुखहेत। अन्त-
 रमुख बिन सुख नहीं। विदित सनातन
 नेत ॥५॥ सो मात तात गुरुनार जो विघ्नी
 हर भजनमें। ताकोडार उदार हर भ-
 ज जनम सफल कारो॥६॥ दो० बिनविवेक
 वैराग में तवपद पंकजटेक। श्रीशंकर मम
 शंकरो देह वैराग विवेक॥७॥ चो० जीवब्रह्म
 में भेदन भोरा। जांहेमिले पुन नांहि वि-
 छोडा। एकवार होइ दर्शन जांको। देखन
 योग्य रहे पुननाको ॥ १ ॥ देह के त्याग
 लग शुभ मंगलगरहे। देहजीव भाव को
 सुभाव ब्रह्म गयेहै॥८॥ दो० कोपकरे निस

पुरुषपर परमेश्वर जब आपा लोकन साथ
 मिलाप कूं चहे दिन भर रात। बुहलेशाहा
 बहजागनेहार दिलदीकरे' चोरिआं साध
 सदावनाहै। १०। कहने वालेदी अधीपडोपी
 ते सुनने वालेदी पाई। सारी ठेरी उसउ-
 ठाई जिस हृदे नाल लगाई ॥ ११ ॥ कहां
 ग्रंथ गण के पठे किंकरमो के कीन। चिद
 जड ग्रंथ प्रभेदनी धोउरजब प्रगटीन।
 वंत ॥ फफाफुलांदे विच ज्यो' वास रै'हदी
 तिवे' घट घट ब्रह्म समाइदाई। फूल देख
 लो पिआ प्रतक्ष दिसदा रूपवासदा न-
 जर ना आंवदाई। घघा घेर संहार से' नि-
 कस गए सोई सूरमे संत कहांवदेनी। वेद
 बाच बैठे तत्व खोज लीता नेकी वदी नू

'हथ न पांवदेनी। स्वता सिद्ध जेहडी नित
 बात होवे आशक तिसीका ध्यान लगां-
 वदेनी। कहे दयाल गोपाल न भेद कोई
 सोई रिंदफकीर कहांवदेनी ॥ चचा चित
 ने चिथिआ नितमै नू गुरो आपणाहाल सुणा
 वना हां। रात सुतिआं मुठिआं बोत जांदी
 दिने धंदिआंदे विच धावना हां। टिंडा व
 न्हदिआंदी वारी लंघ जांदी पडा आपना
 खेत सुकावना हां। कहे दयाल गोपाल वि-
 वेक बाभूं बाभ फाही थीं फसदा जावना
 हां ॥२॥ दाल दूर न कहो कजूर स्वामी
 दूर आखदे आखदे दूर होए। जिन्हां नूर ह-
 जूर दी सुध पाई सोई आपणे आप मन-
 जूर होए। जिन्हां चित नू मार के चूर

कीर्ता गोद जाई महबूबदी विच सोए ।
 कहे दयाल गोपाल अभेद प्यारे चढ़ रंग
 महलते सुख सोए ॥ डोढा । लाहू मकान
 पर आशक बैठेजा ना कोई दूआ देखिया
 ना कोई दूआ आह । दूजी दुर्मतिदिलदी मु-
 रशददेई हटा । मके काहनू जावणा जोघर
 में मिले खुदा इसम जिन्हां दा पाक है ।
 जिसम तिनांदा पाक पानी फकदे । हिंद
 दिसदे उभे करनकलात । नक घमावन ते
 मथा रगडन मसीते खले उलमा उह स-
 ची रमज् न जाणदे जितवल रब रजा
 नेकी वदी न आशकां नित फकर बेपरवाह
 दयाल कहे गोपाल नू छेडे खुदीखुदा ।
 शब्द ॥ कांइयादा गरब न कीजीए कां-

झंझां स्थिर नही रहणा जी । हांड मासंदा
 पिंजरा दसते क्या खिल बैहणा जी ॥
 शिव शिव शिव कहो बावरे समा नेडे हो
 दयाजी । आज कल्ह तै नू भख लै दा मुनि-
 वर नजरौ न आइआजी ॥१॥ व्योम अकाश
 जटा लंभी किसे अंत न पाइआजी । चर्ण
 पातालांदा आसरा वाणी वेद सुनाइआजी
 शिव शिव शिव कहो बावरे समा नेडे आ-
 इआजी । आज काल तै नू भखलैसी मुनि
 वर नजर न आइआजी । ओंकार सूर्य भ-
 गवान माइआ तिसको धूप पछाना पांच
 देवता कारज जान । सभ कारण ब्रह्म प-
 छान ओंकारको करो आदेस । गुरु पूरे का
 यह उपदेश १ ओंकार विच बिंदुसार ।

योगी जप दे दशवें द्वार । शिव उपदेशे
 चारो यार । भूमा ब्रह्म सदा सदासुखा
 सार । ओंकार को करो अदेस गुरु परे
 का यह उपदेश । ओंकार वेदमै सार ।
 सोहंशब्द निशाना मार । खलेपुकार न चारो
 यार । फेर न औसो तैथे वार । ओंकार को
 करो अदेस । गुरु पूर का यह उपदेश । ओंका
 र का देखो रूप । तीन मात्रा करीम कूप । स-
 तचित आनंद तुरी आरूप । आगे वाणी होगी
 ईमूक । ओंकार को करो अदेस । गुरु पूरे का
 यह उपदेश । ओं ओं जप दि आरै हणा । सोहं
 बीच मिला के यार । वेद गुरु ने इओ फर-
 माइ आ । मन को रखो विला के यार । अर्द्ध जर्द्ध
 में संयम करना । देह अभिमान उडा के ।

यार । ब्रह्मअग्नि हृदयमें जागे । कर्म अकर्म
जलाकेयार । तत्त्वका भेद चुकाके । अस्पद
ब्रह्म लखाकेयार । दमडोचमडो सभजगं
खाइआ । कोई विरला बचिआ आकेयार ।
दयालगोपाल स्वरूपमें जुड़ना । मानुष
जन्म होरापाके यार ॥

इति श्रीमतलूणमिश्राणी नगरनिवासी
श्रीमतपूजपाद भक्तजनोन्मैश्रेष्ठ ब्रह्मदशी
योगीराज श्रीमत श्रीमान्श्री १८० भक्त
प्रभुदयालजी विरचितं शब्दवाणी समा-
प्ता शुभं भवतु ॥

अब विदुर शुक्र वृहस्पति तथा श्रीहरम-
रथरीजी आदिक सत्तपुरुषोंके नीतिशास्त्र
का सारभूत अर्थको संक्षेपसे लिखते हैं ।

तहां प्रथमतो जो कार्य करना हो तिसको
 भली प्रकार अपने हृदे में तथा बुद्धिमान अ-
 पने गुरु मित्रों से मिलाकर कारज करे क्यों-
 के जो पुरुष शीघ्रता अर्थात् उतावली से
 कारज को करे है वह पुरुष तमाम आयु भर
 में दुःख पावता है, जैसे बिना विचार से गुरु ने
 शिष्य करना वा शिष्य ने गुरु करना वैराग से
 विना गृहस्थाश्रम का त्याग कर संन्यास-
 आश्रम को धारण करना और लोभ प्रमाद-
 कर कन्या कुपात्रतां ई देवणे आदिक काह-
 ली से की एहू एकर्म पुरुष के दोनों लोकों को
 भ्रष्ट करते हैं। दूसरा पुण्य कर्म करे अथवा
 न करे परंच पाप कर्म को कभी न करे क्योंकि
 की एहू पाप कर्म का फल हाथ से छूटे बाण-

के सदृश पुरुषोंको अवश्यमेव भोगनापड-
 ताहै तिनपापोंविषेभी करीहूई प्रतिज्ञा
 कात्याग तथासंतगौब्राह्मण आदिक महा
 त्माकी रक्षासे विना भूठीगवाही देनी
 तथाभूठबोलना मित्रद्रोही विश्वासघाती
 कीते उपकारका भुलादेना धर्मात्मारजा
 और विद्वानमहात्माओंका तथादाताआदिक
 उत्तमपुरुषोंका मारनाये अतिदारुण पाप
 कथनकरेहैं इनको कभीभूलकरभीन क-
 रना ॥ २ ॥ तीसरेहोतेबल अपनी शक्तिके
 अनुसार कोईन कोई शुभकर्मको जरूर
 करलेना तहां जैसे कूप लगाना तालाव
 बनवाना शिव विष्णुके प्रंदिर तथा विद्या
 कीआं शाला अन्नकेक्षेत्र तैसे विदेशीओं के

निवासकेलीए धर्मशाला बनवावने आं-
 दिक कोईन कोई ऐसे शुभकर्म को जखूर
 करना जो शुभकर्म इसकी परलोकविषे
 अथवा दूसरे जन्मविषे रक्षाकरे ॥ ३ ॥ चौथा
 जिसवक्त पापकर्म फुरे उसवक्त उसपाप
 करनेमें देरी लगा देवे और शुभकर्म जिस
 वक्त फुरे उसीवक्त कर लेवे क्योंकि रोग
 आपदा सबके साथ बनी हुई है । जैसे पूर्व
 युधिष्ठिर बलिचंद्र रामचंद्र हरिचंद्र
 नल दमयंती द्रौपदी सीता आदिक पूर्वर
 जेरानी आंको आपदा बनी आं है जो राजसे
 भ्रष्ट होकर बनी विषे भरमते रहे है इनकी
 गाथाये श्रीमहाभारत विषे बडे विस्तारसे
 कथन करी आं है इसवास्ते होतेबल अप-

नी शक्तिअनुसार जप तप तीरथयात्रा
 विद्याका अध्ययन गुरोंकी सेवा विद्याकी
 शाला तथा मंदरोंको वनवान आदिक कोई
 न कोई शुभकर्मको जरूर कर लेवै जो शुभ
 कर्म इसकी परलोकमें मदद करे ॥ ४ ॥

पांचवां आप किसीसे वधीकी न करे और
 अपने साथ कोई वधीकी करे तो चमाकरे
 क्योंके बराबरी करनेसे करोड़ों देवता
 तथा करोड़ों दैत्य तथा अठाहरा अक्षौणी
 कैरवां पांडवोंकी सेना तैसे एकजपर सौ
 अक्षौणी कृष्णवलदेव आदिक यादवोंकी
 नष्ट हो गई है इसवास्ते बुद्धिमान पुरुषोंने
 थोड़ा गम खाकर किसीके साथ वैर नही
 करना ॥ ५ ॥ षष्ठम बनोमें भटकना वा

खूनीहाथी वा पहाड़ों से गिरकर मरजा-
 ना तो श्रेष्ठ है । परंतु पापकर्मीओं की तथा
 वेद से विरुद्धमत वाले नास्तिकों की संगति
 कभी न करनी क्योंकि पूर्व जो जो पुरुष नष्ट
 हुए हैं सो सो कुसंगति तथा आलस प्रमाद
 करके नष्ट हुए हैं जैसे नहुष राजा भृगु
 अगस्त आदिक ऋषियों के अपराध करने
 से स्वर्ग से गिरकर सर्पयोनि को प्राप्त हुए
 और काकभुशंड अपने काकजन्म से प्रथम
 तीसरे जन्म विषे अपने गुरु को सन्मुख आ-
 द्य हुए देखकर नमस्कार न करने से
 दश हजार १०००० सर्पयोनि को प्राप्त हुए
 और जैसे स्त्री आदि खोटी संगति करके
 जैमनमुनि पराशर शुक्र चंद्रमा इंद्र सो

भरौ शृंगीकृषि । विश्वामित्र तथा एर्द्धल
 राजा आदिक बडेबडे ऋषीमुनि स्त्रीयों
 की संगतिकरनसे नष्टहूएहै, इनकीआं
 गाथाः श्रीमहाभारतविषे बडे विस्तारसे
 कथनकरीआहै और जैसे प्रमादकर हम
 लोक ब्रह्मसे जीवभावको प्राप्तहोकर दुखी
 होरहेहै इसवास्ते बुद्धिमानपुरुषोंने खो-
 टी संगति तथा आलस प्रमाद को त्याग
 कर सत्यशास्त्रके अनुसार यतनशीलहो-
 वणा क्योंके पूर्व जोकुछकिसीको प्राप्त
 हूआहै । सोसत्शास्त्रके अनुसार अपने
 पुरुष प्रयत्नकरनेसेही हूआहै, जैसे पूर्व
 शुकदेव वामदेव जडभरथ तथा ध्रुव
 प्रह्लाद हरिचंद विश्वामित्र गयासुरदैत्य

भागीरथराजा आदिक सत्शास्त्र अनुसार
 यत्नकरनेसेहीं महान पदवीको प्राप्त
 हुएहैं इसवास्ते वेद तथा मनु पराशर
 व्यास वसिष्ठ याज्ञवल्क आदिक सत्शा-
 स्त्रोंके अनुसार तथाआपनी शक्तिअनुसार
 यत्नशील होवणा आलसप्रमादको कभी
 न करणा ॥ ६ ॥ सप्तम केईक विद्याके
 पठनआदिक गुणको जरूर संपादन कर
 लेवणा क्योंके विद्यादिक गुणोंसे रहित
 मर्ख पुरुष दोनों लोगोंके सुखोंसे बेमुखहो
 रहेहैं ॥ सप्तम ॥ ७ ॥ नीतीयोंविषे चतुर
 पुरुष निंद्याकरे या तमामधन नष्टहोजा
 वे अथवा प्राप्तिहोवे अभीमरनाहो अथवा
 कल्प प्रयैत जीवनाहो परंतु जो महात्मा

लोगहोतेहैं वे सतशास्त्रसे विरुद्ध एक
 कदमभी नहीं धरते सप्तम ॥ ७ ॥ अपनी
 वाणीको वशीकाररखणा अर्थात्ऐसीबानी
 बोलनी के जिसके बोलनेसे अपना अथवा
 और किसीका कार्य सवरताहो नहीतो
 मौनकर ईश्वरकेनामोंका जप करना
 क्योंके अनेकों जन्मां के पुण्यां कर
 प्राप्तिहए मनुषजन्मको मुख्यलोकों के
 मनोहारमें तथा नष्टहानेहारै शरीर के
 भोगों क भोग में व्यर्थ नष्ट नही करना
 क्योंके यह अपना शरीर तथा स्त्रीपुत्रां-
 दिक सम्बंधी तैसे अपने मित्रादिक त-
 माम जगत अपने मतलबके हैं, अपने धर्म
 से बिना तथा ईश्वर से बिना और कोई

इसके काम नहीं आवता इसी विषे में
 किसी महात्मा ने वचन कहा है। तहां
 वचन क्या मानुष से नेवडी कै उह मरे के
 विछोडे कीआ ओह तोडे नेह कर साहिब
 से नेवडी न ओह मरे न विछोडे न ओह
 तोडे नेह॥ कृते ज्ञानान्नमुक्तिः। ज्ञाना दे-
 वतुं कैवल्यं ब्रह्मवद ब्रह्मैव भवति॥ इति
 नीतिशास्त्र वचन समाप्तम्॥ शुभं भवतु॥
 कागज सिआही ब्रह्म है। ब्रह्म से लिखनहार
 वक्ता श्रोता ब्रह्म है सर्व ब्रह्म निर्धार हरि
 ओ। तत्सद्ब्रह्मणे नमः॥ इति श्री मत् परम-
 हंस योगीवर्यनाथेन्द्र श्रीमत्परमहंस
 स्वामि नारायणदास योगेश्वर के विद्या-
 र्थी ने तथाच श्रीमत्परमहंस परिव्राजका

चार्घ्यं श्रीकांशीपुरीनिवासौ श्रीस्वामी चि-
 द्धनानन्दगिरिपूज्यपादशिष्येण बोधानन्द
 गिरिणा विरचितं प्राकृत नीतीशास्त्र तथा
 धर्मशास्त्रसार समाप्तम् ॥ शुभं भवतु ॥
 हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे । हरे
 कृष्ण हरे कृष्ण । कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥
 इस मंत्र की आं चतुर्दश माला नपने से
 आठ पैहरो में आनेहारे इकीस हजार
 षट्शत स्वास सफल होजावेहै । यह दो-
 षशाक्षरी मंत्र नारद को प्रति ब्रह्माजी ने
 कथन करा है अब दृष्टि मंद नेत्रपीडा
 निवृत्ति लोए सूर्य के द्वादश नामों को लि-
 खते है । ओं भगवते सूर्याय नमः । ओं
 प्रादित्याय नमः । ओं प्रभाकराय नमः ।